ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

## समस्त देशवासियों को
## श्रवणी उपाकर्म एवं रक्षाबन्धन की
## हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 43, अंक 34 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 जुलाई, 2020 से रविवार 26 जुलाई, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

# श्रावणी पर्व का महत्व, शिक्षाएं एवं अनुकरणीय संकल्प

*श्रावणी पर्व पर हम आर्यजन अपने -अपने घरों में सात दिवसीय विशेष यज्ञ, दैनिक योग, दैनिक स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग, समय-समय पर सेवा, दैनिक साधना आदि कार्यक्रमों का संकल्प लें और आयेजन करें, अपने बच्चे-बच्चियों का उपनयन-यज्ञोपवीत संस्कार करें-कराएं, अपने यज्ञोपवीत बदलें, नए यज्ञोपवीत धारण करें, यज्ञोपवीत के तीन धागे-सूत्रों का संदेश-उपदेश-आदेश श्रवण करें, सोचें, समझें और अमल करें। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण से उऋण होने के लिए संकल्प के अनुसार पुरुषार्थ करें।*

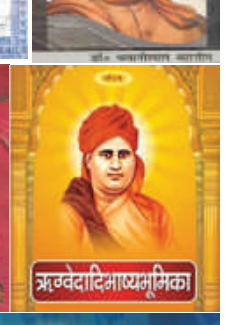


*स्वाध्याय के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन से आनलाइन वेद, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, महर्षि दयानन्द जीवन चरित, आर्य समाज का इतिहास, उपनिषद, दर्शन शास्त्र बच्चों के लिए महापुरुषों के जीवन पर आधारित कॉमिक्स और अनेक अन्य आर्ष साहित्य मंगवाकर उनका स्वाध याय करें। हम आर्यों के घरों में चारों वेद, 11 उपनिषद, 6 दर्शन शास्त्र, बाल्मीकि रामायण, गीता, समृति ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रंथ और आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा रचित प्रेरणाप्रद पुस्तकें होनी ही चाहिए। ऑनलाइन पुस्तकें मंगाने के लिए https://eshop.the aryasamaj.org/shop/index पर लॉगइन करें अथवा लिए श्री रवि प्रकाश जी 9540040339 से सम्पर्क करें।*

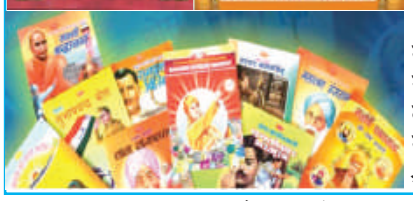

*किंतु हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमें अपने घर में या आर्य समाज में केवल संग्रहालय नहीं बनाना बल्कि पुस्तकालय बनाना है। संग्रहालय तो वस्तुओं को सजाकर रखने कि प्रक्रिया है लेकिन पुस्तकालय में रखी हुई पुस्तक पढ़ने के लिए प्रयोग की जाने वाली होती हैं। जबकि संग्रहालय में रखी हुई प्रत्येक वस्तु या पुस्तकें केवल आप देख सकते हैं, उन्हें ले नहीं सकते। उपयोगिता तो तभी है जब हम स्वाध्याय का नियम बनाएं। श्रावणी पर्व एवं रक्षाबंधन की सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। - सम्पादक*

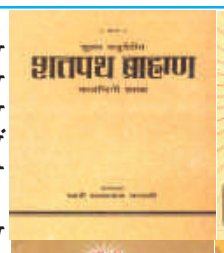

हमारी भरतीय वैदिक संस्कृति में श्रावणी पर्व का बड़ा महत्व है। यह पर्व वर्षा के मौसम में आता है। प्राचीन समय में हमारे पूर्वज अपने कर्तव्यों को परिपूर्ण करके वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का विधिवत पालन करते हुए तपोवनों-आश्रमों में साधना पूर्ण जीवन जीते थे। जब चौमासा अर्थात बरसात का मौसम आता था तो वे वनों में सर्प आदि जहरीले जीव-जंतु, कीट पतंगों की अधिकता होने के कारण नगरों की और आते थे। इस मासैम में बरसात ज्यादा होने के कारण कृषि, व्यापार और अन्य सभी विशेष कार्यो पर लगभग विराम लग जाता था। वह विराम ऐसा नहीं होता था जैसे कोरोना काल में लॉकडाउन हुआ था या हो रहा है। उस समय वर्षा भी इससे कहीं अधिक होती थी और आवागमन के साधन भी अपेक्षाकृत कम ही होते थे। अत: बरसात के इन दिनो का विशेष महत्व होता था। वानप्रस्थी और संन्यासी वृंदों के सान्निध्य में बड़े-बड़े यज्ञों और सत्संगों का आयोजन होता था। सभी आयुवर्ग के लोग इसमें भाग लेते थे। सारे समाज में एक उत्सव जैसा माहोल बन जाता था। वानप्रस्थी और संन्यासी लोग अपनी अनुभूत की हुई ज्ञान राशि का सहर्ष वितरण करते थे और बच्चे युवा स्त्री-पुरुष सब मिलजुलकर उनके उपदेश,संदेश और कन्याणकारी आदेशों के अनुरूप वेद उपनिषद आदि ग्रंथों का स्वाध्याय किया करते थे। यह पर्व इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जाता था क्योंकि इसमें घर के बड़े-बुजुर्ग अपने बच्चों के छोटे छोटे बच्चों को कहानियों के माध्यम से वीरत-धीरता के ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराते थे।

### श्रावण में सुनने का महत्व

श्रावण और श्रवण दोनों शब्दों में केवल आ की मात्रा का अंतर है। साधरणतया श्रावण को बोलचाल की भाषा में सावन कहा जाता है। वस्तुत:श्रावण का मतलब श्रवण करने से जोड़कर देखा जाता है। मतलब श्रावण मास में हम सुनने वाले बनें, ध्यान पूर्वक सुनें - **भद्रं कर्णेभि: श्रणुयाम देवा:** अपने कानों से अच्छा सुनें, कल्याणकारी वेदोक्त वचनों को सुनें। जीवन में सुनना भी अवश्य आना चाहिए, लेकिन क्या सुनें क्या न सुनें यह भी हमें पता होना चाहिए। श्रावण में श्रवण करने का सबसे बड़ा यही संदेश है। हमें ईश्वर की वाणी को सुनना चाहिए, और केवल

*- शेष पृष्ठ 5 पर*

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में वैबिनार के माध्यम से प्रात:कालीन वेला में
# मनुस्मृति का सत्य-असत्य : विषय पर श्री धर्मपाल आर्य जी साप्ताहिक प्रवचन कार्यक्रम सम्पन्न

13 जुलाई से 19 जुलाई 2020, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा 'मनुस्मृति सत्य -असत्य' विषय पर एक विशेष ऐतिहासिक परिचर्चा जूम एप्प के माध्यम से व्याख्यान माला के रूप में सहर्ष संपन्न हुई। इन सात दिनों में आचार्य धर्मपाल आर्य जी ने आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ताओं और सभी सम्मानित सदस्यों को एक ऐसी अनोखी ऐतिहासिक तथ्यपूर्ण घटना से अवगत कराया जिससे आर्यजन स्वयं को गौरवान्वित,आशान्वित और अत्यंत लाभान्वित महसूस करने लगे। क्योंकि संसार में कर्म ही एक ऐसी शक्ति है जो अपनी कहानी स्वयं कहती है और इस ऐतिहासिक घटना से यह भी पूर्णतया स्पष्ट हो गया कि सत्य परेशान अवश्य हो सकता है लेकिन पराजित कभी नहीं हो सकता। आदरणीय प्रधान जी ने अपने उदबोधन में बताया कि 1989 में राजस्थान उच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ के मुख्य न्यायाधीश श्री नरेंद्र मोहन कासलीवाल जी के नेतृत्व में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया था कि विश्व के प्रथम संविधान निर्माता महर्षि मनु की मूर्ति राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रांगण में लगाई जाए। एक सुंदर और मानव कद के अनुरूप महाराज मनु की मूर्ति को विशेष रूप से बनवाया गया और जब उस महापुरुष की मूर्ति की स्थापना और अनावरण करने का समय निश्चित किया गया तो कुछ झूठे अंबेडकरवादी संगठनों और राजनीति की रोटियां सेकने वालों ने अज्ञानतावश बिना सोचे -समझे इसका पुरजोर विरोध करते हुए कहा कि महर्षि मनु ने हमारी भावनाओं को ठेस पहुंचाई हैं। उन्होंने शूद्रों सहित नारी जाति का अपमान किया है, वर्ण व्यवस्था पर सुनी-सुनाई बातों पर यकीन करते हुए उन्होंने महर्षि मनु को इस अनैतिक कार्य के लिए जिम्मेदार व दोषी ठहराते

*- शेष पृष्ठ 4 एवं 8 पर*

*.....श्री धर्मपाल आर्य जी ने न्यायाधीशों के सामने अपना पक्ष रखते हुए कहा कि आपकी पूर्ण पीठ ने महर्षि मनु की मूर्ति लगाए जाने का आदेश दिया था और अब मूर्ति हटाने का आदेश दे रहें हैं। अत: एक ही न्यायालय द्वारा दो विपरीत आदेश देना क्या उचित होगा? अर्थात इसका मतलब होगा कि न्यायालय ने एक आदेश गलत दिया, अत: आपको विचार पूर्वक निर्णय लेना चाहिए। मैंने प्रतिपक्ष का नेतृत्व करने वाले अधिवक्ता श्री भंवर बागड़ी से पूछा कि आप जिनका पक्ष रख रहे हैं, उनका नाम श्री रामनाथ आर्य है, मैंने न्यायालय से कहा कि भगवान श्री राम अर्थात् जो अपने आपको आर्यपुत्र मानता है और वह संसार में किसी भगवान की श्रेणी में आते हैं और आप भी अपने नाम के साथ आर्य लगाते हैं तो यह अधिकार इनको किसने दिया, मैंने कहा कि यह अधिकार महर्षि मनु ने ही आपको दिया है।.....*

वेद-स्वाध्याय

# धीर हृदय-गुह में उपासना करते हैं

**पश्वा न तायुं गुहा चतन्तं नमो युजानं नमो वहन्तम् ।**
**सजोषा धीराः पदैरनु ग्मन्नुपं त्वा सीदन् विश्वे यजत्राः ।। -ऋ० १/६५/१**
**ऋषिः** पराशरः शक्त्यः ।। **देवता** - अग्निः । **छन्दः** द्विपदाविराट् ।।

**शब्दार्थ** - हे अग्ने! पश्वा = पशु के, दर्शन-शक्ति के साथ **तायुं न** = चोर की तरह **गुहा चत्तन्तम्** = गुहा में, हृदय गुहा में, गये हुए [छिपे हुए] और वहाँ **नमो युजानम्** = अन्न व नमस्कार से युक्त होते हुए तथा **नमो वहन्तम्** = उस अन्न व नमस्कार को धारण करते हुए तुझको **सजोषाः** = मिलकर प्रीति तथा सेवन करनेवाले **धीराः** = धैर्यशाली ज्ञानी लोग **पदैः** = पदचिह्नों , प्राप्ति-साधनों द्वारा **अनुग्मन्** = पीछा करते हैं, खोजते हैं, और खोजकर वे विश्वे सब **यजत्राः** = यजनशील लोग **त्वा** = तुझे, तेरी **उपसीदन्** = उपासना करते हैं ।

**विनय** - मैं तुझे कैसे ढूँढूं? हे मेरे अग्ने! आत्मन्! तू मुझसे ही छिपकर न जाने कहाँ जा बैठा है, किस गहन गुफा में जा छिपा है? जैसे, जब कोई चोर किसी के पशु को चुरा ले जाता है और कहीं पहाड़ की गुफा में जा छिपता है तो पशुवाला अपने पशु को घर पर न पाकर ढूँढ मचाने लगता है, उसी तरह जबसे मुझे पता लगा है कि मेरे 'पशु' मेरी दर्शन-शक्ति खो गई है तब से मैं हे आत्मन्! तुझे ढूंढने लगा हूं। तब से जानने लगा हूँ कि मेरी वह दर्शन शक्ति तेरे ही साथ चली गई है और अब वह मुझे तुझसे ही मिल सकती है, अन्य कहीं से नहीं। पर हे आत्मन्! मैं तुझे कहां ढूंढूं? कैसे ढूंढूं?

कहते हैं कि तू मेरे ही अन्दर मेरी 'हृदय की' कहानेवाली किसी गम्भीर गुफा में छिपा पड़ा है; कहते हैं कि तू वहाँ भी अपने अन्न को, नमस्कार को पाता है और उसे स्वीकार भी करता रहता है; पर फिर भी तू मुझे दर्शन नहीं देता, मिलता नहीं। जो धीर पुरुष होते हैं, जो लगातार यत्न करते जाने वाले ज्ञानी पुरुष होते हैं तथा जो पररपर मिलकर प्रीति और सेवन करने वाले कर्मशील होते हैं, वे तुझे पदों द्वारा, तेरे पदचिह्नों द्वारा खोजने में लग जाते हैं। वे मन्त्रों के पदों से, तेरी प्राप्ति कराने के साधनरूपी अन्य नाना प्रकार के पदों से, तेरा पीछा करते हैं। संसार के दुःख-दर्द, भय, पीड़ाओं से जो तेरा संकेत मिलता है उसे वे ध्यान से देखते हैं और प्रतिदिन सुषुप्ति, संध्या, मृत्यु की घटनाओं में जो तेरे पदचिह्न चमकते हैं, इन्द्रियों में जो तेरे पदचिह्न पड़े हैं, सब ज्ञान में जो तेरे पदचिह्न हैं उनसे तेरा अनुगमन करते हैं। इस प्रकार खोजते-खोजते अन्त में ये यजन के अभिलाषी तुझे पा लेते हैं और ये यजनशील लोग मिलकर तेरी उपासना 'यजन' करने लगते हैं। क्या मैं भी कभी, हे मेरे आत्मन्! तुझे पाकर, 'यजत्र' बनकर, तेरी उपासना में बैठ सकूँगा?

**-: साभार :-**
**वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

**ऐतिहासिक त्रिष्टुप पर्वत - भारत का भूभाग जिस पर चीन का है कब्जा**

# तिब्बत अब विश्व का मुद्दा बनना चाहिए

चीन सीमा से पीछे हट गया है लेकिन अब हमें चीन की कमजोरियों की ओर विश्व का ध्यान खींचना होगा। क्योंकि चीन की सबसे बड़ी कमजोरी है तिब्बत और भारत अकेला एक ऐसा देश है, जो चीन को तिब्बत के कारण पानी पिला-पिला कर मार सकता है। तिब्बत का क्षेत्रफल 12 लाख वर्ग किलोमीटर का है जो हमारे एक-तिहाई क्षेत्रफल से थोड़ा बड़ा है, हमारा 32 लाख है और तिब्बत का 12 लाख। कमाल देखिये इतने बड़े क्षेत्र को जबरदस्ती चाइना ने अपने में मिला लिया। जो आज तक उसके कब्जे में है।

ऐसा नहीं है जैसा भारत की मीडिया में हमेशा कई चेनल चीन को ताकतवर बताते हैं और दुबके रहने की सलाह देते हैं। बस यही चीन की ताकत है वरना चीन की कमजोरी ही कमजोरी है। दूसरा सिर्फ हथियारों से कोई देश ताकतवर नहीं होता इसका सबसे बड़ा उदहारण रूस है। तीन हजार परमाणु हथियार उसकी जेब में थे। लेकिन फिर भी अमेरिका ने उसके दस टुकड़े कर दिए हैं और रूस के हथियार रखे रह गये थे।

तिब्बत की चीन से मुक्ति जरुरी क्यों है, असल में तिब्बत कभी विश्व के सबसे अहिंसक देशों में था, पूरी तरह बौद्ध मत का पालन करने के कारण इसके पास पर्याप्त सेना भी नहीं होती थी। हालाँकि हमेशा ऐसा नहीं रहा एक समय वो भी था जब सन 763 में तिब्बत की सेनाओं ने चीन की राजधानी पर भी कब्जा कर लिया था और चीन से टैक्स लेना शुरू कर दिया था। लेकिन जैसे-जैसे बौद्ध मत में उनकी रुचि बढ़ी, उनके अन्य देशों से संबंध राजनीतिक न रहकर आध्यात्मिक होते चले गए। यही आध्यात्मिकता उनकी कमजोरी बन गयी, अहिंसा का ताबीज पीकर चीन के साथ एक संधि की। यह संधि सन 821-22 के आसपास हुई जिसके अनुसार एक देश कभी भी दूसरे पर आक्रमण नहीं करेगा। दलाई लामा अपनी किताब मेरा देश निकाला में लिखते हैं कि तिब्बत में जोखांग मंदिर सबसे पवित्र माना जाता है, इसके प्रवेश द्वार पर खड़ा एक पत्थर का स्तंभ है। जो तिब्बत के प्राचीन इतिहास और उसकी शक्ति का परिचायक है, इस पर तिब्बती और चीनी दोनों भाषाओं में सन 821-22 में दोनों देशों के मध्य हुई स्थायी संधि का विवरण खुदा हुआ है। जो इस प्रकार है तिब्बत के महाराज तथा चीन के महाराज दोनों का रिश्ता भतीजे और चाचा का है। दोनों ने एक महान संधि की और उसकी पुष्टि की है। सब देवता और मनुष्य इसे जानते हैं और गवाही देते हैं कि यह कभी बदला नहीं जाएगा।

अब चीन की धोखाधड़ी समझिये, जिस तरह उसने 6 जून को भारत से कहा हम पीछे हट जायेंगे, लेकिन फिर धोखे से हमारे जवानों पर कील लगे डंडो से हमला कर दिया। इसी तिब्बत के साथ पहले धोखा हो चुका है। एक कहावत है कि आप चोर और ठग पर भरोसा कर लीजिये लेकिन वामपंथी पर नहीं। क्योंकि इतने सारे साक्ष्यों और प्रमाणों के होते हुए भी चीन की नई-नई वामपंथी सरकार ने 1950 से ही चोरी-छिपे और धोखे से तिब्बत में अपनी घुसपैठ शुरू कर दी। जब दलाई लामा को इसका आभास हुआ तो उन्होंने सभी महत्वपूर्ण देशों, जिनमें चीन भी शामिल था के यहां अपने राजदूत भेजे। लेकिन जहां अन्य देशों तक उनके राजदूत पहुंच ही नहीं पाए, वहीं चीन की सरकार ने इन राजदूतों से जबदस्ती एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करवा लिए और दलाई लामा की नकली मुद्रा भी उस पर अंकित कर दी। इस अनुबंध में लिखा था कि चीनी अधिकारी और सेना तिब्बत में तिब्बत के लोगों को सहायता पहुंचाने के लिए काम करेगी। इसके बाद दलाई लामा को बीजिंग भी बुलाया गया, लेकिन वहां जाकर लामा की समझ में आने लगा कि चीनी सरकार वास्तव में क्या चाह रही है। इधर चीनी सेना और तिब्बत के लोगों के बीच आए दिन झड़पें होने लगीं।

*.....सन 763 में तिब्बत की सेनाओं ने चीन की राजधानी पर भी कब्जा कर लिया था और चीन से टैक्स लेना शुरू कर दिया था। लेकिन जैसे-जैसे बौद्ध मत में उनकी रुचि बढ़ी, उनके अन्य देशों से संबंध राजनीतिक न रहकर आध्यात्मिक होते चले गए। यही आध्यात्मिकता उनकी कमजोरी बन गयी, अहिंसा का ताबीज पीकर चीन के साथ एक संधि की। यह संधि सन 821-22 के आसपास हुई जिसके अनुसार एक देश कभी भी दूसरे पर आक्रमण नहीं करेगा। दलाई लामा अपनी किताब मेरा देश निकाला में लिखते कि तिब्बत में जोखांग मंदिर सबसे पवित्र माना जाता है, इसके प्रवेश द्वार पर खड़ा एक पत्थर का स्तंभ है। जो तिब्बत के प्राचीन इतिहास और उसकी शक्ति का परिचायक है, इस पर तिब्बती और चीनी दोनों भाषाओं में सन 821-22 में दोनों देशों के मध्य हुई स्थायी संधि का विवरण खुदा हुआ है। .....*

इस बीच एक बौद्ध सम्मेलन में भाग लेने के कारण दलाई लामा भारत आए। भारत आने का एक कारण ये भी था कि उन्हें भारत से सर्वाधिक आशा भी थी। वह तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से मिले और अपनी और तिब्बत की पूरी दुखद और पीड़ादायक कथा सुनाई। परंतु नेहरू ने उन्हें किसी भी तरह की सहायता देने से मना कर दिया। फिर भी दलाई लामा उनसे कई बार मिले और यहां तक कह दिया कि तिब्बत की स्थिति इतनी विस्फोटक है कि मैं स्वयं भी वहां नहीं जाना चाहता और यह भी कि मुझे भारत में ही रहने दीजिए।

लेकिन नेहरू ने उनसे कहा कि मैं आपके लिए तत्कालीन चीनी प्रधानमंत्री चाउ एन लाइ से बात करूंगा, और संयोगवश कुछ ही दिनों बाद चाउ एन लाइ भारत आए और नेहरू ने दलाई लामा से उनको मिलवाया। लेकिन चाउ एन लाइ झूठ बोलने में माहिर था उसनें तिब्बत को लेकर दलाई लामा को विश्वास दिलाया कि आप ल्हासा पहुंचिए सब कुछ ठीक हो जाएगा।

दलाई लामा अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि झूठ बोलना चीनियों के खून का हिस्सा है, दलाई लामा ल्हासा पहुंचे और ल्हासा आने के लिए दलाई लामा ने नेहरू को निमंत्रण दिया। इसके दो कारण थे एक तो नेहरु के आने से चीनी सरकार के व्यवहार में परिवर्तन आए, और दूसरा ये कि शायद यहाँ का रक्तपात देखकर नेहरू के मन में सहानुभूति खड़ी हो और वह तिब्बत की मदद करने को तैयार हो जाये। लेकिन दलाई लामा नेहरू की प्रतीक्षा करते रहे, पर चीनियों ने नेहरू की यात्रा ही रद्द करवा दी। इस प्रकार दलाई लामा के लिए आशा की जो अंतिम किरण थी, वह भी जाती रही।

नेहरू को लेकर दलाई लामा लिखते हैं, सबसे बुरी बात यह थी कि भारत ने चुपचाप तिब्बत पर चीन के दावों को स्वीकार कर लिया था। अप्रैल 1954 में नेहरू जी ने चीन के साथ एक नई संधि पर हस्ताक्षर किए थे, जिसमें पंचशील नामक एक आचार-संहिता थी, जिसके अनुसार यह था कि भारत तथा चीन किसी भी परिस्थिति में एक-दूसरे के 'आंतरिक' मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। *- शेष पृष्ठ 7 पर*

# तमिल लड़की के बाइबल पर सवाल

***.....एस्टर ने आरोप लगाया कि बाइबल में उसकी जाति नहीं पाई गई है, पूरी बाइबल में कहीं भी भारत का उल्लेख नहीं है, उसमें सिर्फ रोम इटली के आसपास का सिमटा हुआ इतिहास है। वह कैसी धार्मिक पुस्तक है, जिसमें स्त्री को चुडेल जैसे शब्दों से पुकारा गया है। एस्टर पूछती है, अगर बाइबल ईश्वरीय ग्रन्थ है तो विरोधाभास कैसे हो सकते हैं? आखिर कैसे बाइबिल के पाठ में त्रुटियां हो सकती हैं। जबकि इसे ईश्वर द्वारा लिखित पवित्र ग्रन्थ बताया जाता है। आखिर उसमें यह किसने लिखा कि यदि बाइबल को झूठा कहा तो परमेश्वर का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा? क्या कोई ईसाई बता सकता है कि 2500 साल पहले जब बाइबल नही थी तो क्या ईश्वर नहीं था? और अगर बाइबल समाप्त हो गयी तो क्या ईश्वर समाप्त हो जायेगा? क्या ईश्वर सिर्फ एक पुस्तक के सहारे टिका है? .....***

इक तमिल लड़की का नाम एस्टर धनराज, उम्र कोई 35 वर्ष, एक तेलुगु हिन्दू ब्राह्मण के घर में इसने जन्म लिया। जब थोड़ी बड़ी हुई तो ईसाई मिशनरीज के प्रभाव में आई, उसने जीसस के चमत्कारों के किस्से सुने। जिनमें अंधे देखने लगते थे, बहरे सुनने लगते थे, अगर मृत इन्सान को आवाज दे दें तो वे जिन्दा हो जाया करते थे। ऐसी अनेकों कपोल कल्पित कहानियाँ एस्टर ने सुनी तो उसका मन उसे खींचकर चर्च में ले गया और एस्टर धनराज ने ईसाई मत को स्वीकार कर लिया।

एस्टर धनराज, जिसने अपनी छोटी सी उम्र में दो बदलावों का सामना किया। पहला तो हिंदू धर्म से ईसाई मत में और दूसरा ईसाई मत से हिंदू धर्म में। इसके बाद एस्टर ने जो धज्जियाँ मिशनरीज की उड़ाई वह वाकई काबिले तारीफ है। कहानी तमिलनाडु से शुरू होती है अमेरिका पहुँचती है और अमेरिका से वापस भारत आती है। एस्टर धनराज की उम्र उस समय करीब 17 वर्ष रही होगी जब वो मिशनरीज के बहकावे में आई थी। यानि सत्रह वर्ष की धनराज ने ईसाई बनने के कुछ वर्षों बाद शादी की फिर यूएसए चली गई। अमेरिका पहुँचने के बाद धनराज ने एक प्रतिष्ठित अमेरिकी विश्वविद्यालय में औपचारिक रूप से ईसाई मत और बाइबल का अध्ययन शुरू किया। उस दौरान उसने पाया कि अमेरिकी पादरी भारतीय ईसाइयों से दूर रहते हैं, बिल्कुल ऐसे जैसे अरब के मुसलमान भारतीय मुसलमानों को ओछा मानते हैं।

इन्फिनिटी फाउंडेशन को अपना इन्टरव्यू देते हुए एस्टर ने ईसाई मत पर अनेकों सवाल खड़े किये। पहला यह कि बाइबल पढ़कर लगता है जैसे सब कुछ काल्पनिक और जादुई है। ऐसा लगता है जैसे पृथ्वी का निर्माण जीसस से बस कुछ साल पहले हुआ हो वो भी चुटकियों में। कभी मिटटी उठाकर इन्सान बना दिए, कभी धरती, कभी चाँद, कभी सूरज। वह पृथ्वी के निर्माणवाद पर भी सवाल खड़े करती है कि बाइबल झूठी और आधारहीन पुस्तक है। वह मात्र कुछ पूर्वाग्रह से शिकार साम्राज्यवादी लोगों की कल्पना है।

एस्टर ने आरोप लगाया कि बाइबल में उसकी जाति नहीं पाई गई है, पूरी बाइबल में कहीं भी भारत का उल्लेख नहीं है, उसमें सिर्फ रोम-इटली के आसपास का सिमटा हुआ इतिहास है। वह कैसी धार्मिक पुस्तक है, जिसमें स्त्री को चुडेल जैसे शब्दों से पुकारा गया है। एस्टर पूछती है, अगर बाइबल ईश्वरीय ग्रन्थ है तो विरोधाभास कैसे हो सकते हैं? आखिर कैसे बाइबिल के पाठ में त्रुटियां हो सकती हैं। जबकि इसे ईश्वर द्वारा लिखित पवित्र ग्रन्थ बताया जाता है। आखिर उसमें यह किसने लिखा कि यदि बाइबल को झूठा कहा तो परमेश्वर का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा? क्या कोई ईसाई बता सकता है कि 2500 साल पहले जब बाइबल नही थी तो क्या ईश्वर नहीं था? और अगर बाइबल समाप्त हो गयी तो क्या ईश्वर समाप्त हो जायेगा? क्या ईश्वर सिर्फ एक पुस्तक के सहारे टिका है?

हालाँकि एस्टर से पहले भी बाइबल के दावों पर कई बार विज्ञान भी सवाल उठा चुका है और वैज्ञानिक भी। कहा जाता है किसी भी सत्य को समझने के लिए उसके अंत तक जाना होता है, एक समय डार्विन ने जो सिद्धांत दिया, वह बाइबल को पढ़कर उसके विरोध में दिया था। डार्विन पादरी बनना चाहता था लेकिन जब बाइबल पढ़ी तो सवाल खड़े हो गये। कि हम कौन हैं? कहां से आये हैं? सृष्टि में इतनी विविधता कैसे और क्यों उत्पन्न हुई? क्या इस विविधता के पीछे कोई एक सूत्र है?

जब ऐसे प्रश्नों ने डार्विन को कुरेदना शुरू किया तो उन्होंने बाइबल में इनका उत्तर खोजने का प्रयास किया। अब बाइबिल के मुताबिक तो ईश्वर ने एक ही सप्ताह में सृष्टि की रचना कर दी थी जिसमें उसने चाँद, सूरज, पेड़-पौधे, जीव-जंतु, पहाड़-नदियां और मनुष्य को अलग-अलग छह दिन में बनाया था। यह सब पढ़कर डार्विन को घोर निराशा हाथ लगी कि छः दिन में यह सब नहीं हो सकता, सब कुछ धीरे-धीरे हुआ होगा।

इस कारण उन्होंने विकासवाद की स्थापना कर दी। क्योंकि उनके लिखे कई पत्रों और उनकी कई किताबों में ईसाइयत के प्रति उनके विरोधी विचार साफ नजर आते हैं। अपनी जीवनी में डार्विन ने लिखा था जिन चमत्कारों का समर्थन ईसाइयत करती है उन पर यकीन करने के लिए किसी भी समझदार आदमी को प्रमाणों की आवश्यकता जरूर महसूस होगी।

ठीक इसी तरह एक छोटी सी कहानी गैलीलियो के जीवन से भी जुड़ी है। जिसने बहुत पहले इनके झूठ पर सवाल खड़े कर दिए थे। क्योंकि गैलीलियो तक सारा यूरोप यही मानता रहा कि सूरज पृथ्वी का चक्कर लगाता है, जब गैलीलियो ने प्रथम बार कहा कि न तो सूर्य का कोई उदय होता है, न कोई अस्त होता है। बल्कि पृथ्वी ही सूर्य के चक्कर लगाती हैं। तब गैलीलियो को वेटिकन पोप की अदालत में पेश किया गया। सत्तर वर्ष का बूढ़ा आदमी, उसको घुटनों के बल खड़ा करके कहा गया, तुम क्षमा मांगो! क्योंकि बाइबिल में लिखा है कि सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है, पृथ्वी सूर्य का चक्कर नहीं लगाती, और तुमने अपनी किताब में लिखा है कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है। तो तुम बाइबिल से ज्यादा ज्ञानी हो? बाइबिल, जो कि ईश्वरीय ग्रंथ है! जो कि ऊपर से अवतरित हुआ है!

गैलीलियो मुस्कुराया और उसने कहा, आप कहते हैं तो मैं क्षमा मांग लेता हूं, मुझे क्षमा मांगने में कोई अड़चन नहीं है। आप अगर कहें तो मैं अपनी किताब में सुधार भी कर दूंगा। मैं यह भी लिख सकता हूं कि सूरज ही पृथ्वी के चक्कर लगाता है, पृथ्वी नहीं। लेकिन आपसे माफी मांग लूं, किताब में बदलाहट कर दूं, मगर सचाई यही है कि चक्कर तो पृथ्वी ही सूरज के लगाती है और सचाई नहीं बदलेगी। मेरे माफी मांग लेने से सूरज फिक्र नहीं करेगा, न पृथ्वी फिक्र करेगी, मेरी किताब में बदलाव कर देने से अभी तक बाइबल गलत है इसके बाद मेरी किताब भी गलत हो जाएगी।

सिर्फ यही नहीं कुछ समय पहले उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर जेम्स ए ग्रे बार्ट एहरमन ने मसीह में अपना विश्वास खो दिया था क्योंकि उन्होंने जाहिर तौर पर बाइबल में एक के बाद एक कई गलतियों को खोज लिया था। उसने कहा क्या अमानवीयता ईसाई मत का एक अनिवार्य सिद्धांत होना चाहिए? क्योंकि कहा जाता है कि बाइबल परमेश्वर ने लिखी है तो क्या उसमें जो अमानवीयता लिखी है वो भी ईश्वर ने लिखी है? क्या यह अज्ञानता मानव जाति के उद्धार के बजाय नुकसान नहीं पहुंचा रही है?

इसी तरह बिली ग्राहम नाम के एक प्रोफेसर ने एक बार कहा था कि हे भगवान! इस पुस्तक में बहुत सी बातें हैं जो मुझे समझ नहीं आ रही हैं। इसे पढ़कर मैं सिर्फ झूठ का प्रचार कर सकता हूँ ईश्वर का नहीं, इसे पढ़कर मैं किसी दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक को उनके सवालों का जवाब नहीं दे सकता हूं, मैंने बाइबल से दूर हटकर ईश्वर की उपस्थिति और शक्ति को महसूस किया जिसे बाइबल के साथ मैंने कभी महसूस नहीं किया था।

ठीक इसी तरह अब एस्टर धनराज बता रही है कि बाइबिल में कई कहानियों के बारे में किसी के पादरी के पास कोई जवाब होता। पहला किताब उत्पत्ति के ही बारे में एस्टर कहती हैं मुझे विज्ञान से प्यार था जब मैं बड़ी हो रही थी मेरे लिए गणित उबाऊ था, अंग्रेजी आसान थी, लेकिन विज्ञान आकर्षक था, मैं सृष्टि की उत्पत्ति की कहानी के साथ पृथ्वी की उम्र जानना चाहती थी। लेकिन बाइबल में जो उत्पति की कहानी बताई वह सिर्फ हँसने योग्य है, हालाँकि मेरे पास कई अन्य परेशान करने वाले प्रश्न थे कि कैसे इस भगवान ने उन लोगों का कत्ल किया जो अपने चुने हुए लोगों यहूदियों के नहीं थे, अब मैं अपने मूल धर्म में वापिस आई हूँ मैं फिर से खुद को सहज महसूस कर रही हूँ।

*- राजीव चौधरी*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| • प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| • विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| • स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

**प्रथम पृष्ठ का शेष**

हुए उनकी मूर्ति को राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रांगण से हटाने की जोरदार मांग की। इस विषय पर एक बड़ा वाद -विवाद उत्पन्न हो गया तथा इस पर न्यायालय में बहस के लिए 28.07.1989 की तिथि निश्चित की गई। मूर्ति लगाई जानी चाहिए इसके पक्ष में आचार्य धर्मेंद्र महाराज, पौराणिक विद्वान ने एक याचिका दे रखी थी लेकिन उनके पास व्यावहारिक मान्यताएं तो थीं किंतु ठोस प्रमाण और तर्क शक्ति का अभाव था। उन्होंने श्री धर्मपाल आर्य जी से संपर्क साधा और न्यायालय में महर्षि मनु के पक्ष में तर्क रखने के लिए विचार विमर्श किया। श्री धर्मपाल आर्य जी ने डा. सुरेंद्र कुमार आर्य जी, वर्तमान कार्यकारी प्रधान परोपकारणी सभा अजमेर से इस विषय पर शोधकर्ता के सहयोग से अपना पक्ष मजबूती से रखने की तैयारी की।

अधिवक्ता माननीया सुश्री माधुरी सिंह के सहयोग से तथा डा. सुरेंद्र कुमार आर्य जी के साथ, न्यायाधीशों की डबल बेंच के सामने श्री धर्मपाल आर्य जी उपस्थित हुए। अधिवक्ता महोदया ने न्यायालय में निवेदन किया कि मुझे इस विषय पर अधिक जानकारी नहीं है अत: श्री धर्मपाल आर्य जी जोकि स्वयं एक याचिकाकर्ता हैं, वे स्वयं अपना पक्ष रखेंगे, इसकी अनुमति दी जाए। उन्होंने न्यायालय में अपना पक्ष रखने हेतु 14 बिंदुओं पर विवेचन करने हेतु निवेदन किया था और अनुरोध किया था कि विश्व के प्रथम संविधान निर्माता महर्षि मनु की मूर्ति न्यायालय परिसर से न हटाई जाए। मैं इन बिंदुओं पर अपनी ओर से संपूर्ण ऐतिहासिक विवरण एवं तथ्यों के साथ अपने पक्ष की प्रस्तुति दूंगा। लेकिन माननीय न्यायाधीशों ने आचार्य धर्मपाल जी को अगले दिन बुलाया और अपना पक्ष रखने के लिए केवल 15 मिनट का ही समय दिया। श्री धर्मपाल आर्य जी के जीवन में यह प्रथम अवसर था जब न्यायालय के न्यायाधीशों के सामने स्वयं मनुस्मृति के सत्य स्वरूप को लेकर ऐतिहासिक तथ्य रखकर यह सिद्ध करना था कि वास्तव में सच्चाई क्या है? आपने परमपिता परमात्मा को याद किया, गायत्री मंत्र का मनन् किया और दृढ़ निश्चय से अपना पक्ष प्रस्तुत करने की तैयारी की। श्री धर्मपाल जी ने न्यायालय से अनुरोध किया और अनुमति चाही कि वह अपनी मातृभाषा में विस्तार पूर्वक तथ्य रख सकें, उन्होंने प्रदर्शित किया कि उनकी इंग्लिश भाषा उतनी सुदृढ़ नहीं है, जो उनको पक्ष रखने हेतु दी गई है। आचार्य धर्मपाल जी ने न्यायालय से विनम्र आग्रह किया कि अपने प्रस्तुत 14 बिंदुओं को बोलने मात्र का समय 15 मिनट लगेगा तो उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी वकील से अनुरोध किया कि आप इन 14 बिन्दुओं में से सबसे कमजोर बिंदु को इंगित कर दीजिए, मैं उस पर ही अपना पक्ष प्रस्तुत करूंगा और जो न्यायाधीशों को उचित लगे वह उस पर फैसला कर दे देवें। इस पर माननीय न्यायाधीशों में कहा कि हम महर्षि मनु की गूढ़ बातों को समझने, पढ़ने और जानने का प्रयास करेंगे अत: आप अपने सभी बिंदुओं पर प्रकाश डालिए, तथ्य प्रस्तुत करिए और अपना पूरा पक्ष रखिए।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने न्यायाधीशों से निवेदन करते हुए कहा कि आपकी पूर्ण पीठ ने महर्षि मनु की मूर्ति लगाए जाने का आदेश दिया था और अब मूर्ति हटाने का आदेश दे रहें हैं अत: एक ही न्यायालय द्वारा दो विपरीत आदेश देना

क्या उचित होगा? अर्थात इसका मतलब होगा कि न्यायालय ने एक आदेश गलत दिया, अत: आपको विचार पूर्वक निर्णय लेना चाहिए।

मैंने प्रतिपक्ष का नेतृत्व करने वाले अधिवक्ता श्री भंवर बागड़ी से पूछा कि आप जिनका पक्ष रख रहे हैं, उनका नाम श्री रामनाथ आर्य हैं, मैंने न्यायालय से कहा कि भगवान श्री राम अर्थात् जो अपने आपको आर्यपुत्र मानता है और वह संसार में किसी भगवान की श्रेणी में आते हैं और आप भी अपने नाम के साथ आर्य लगाते हैं तो यह अधिकार इनको किसने दिया, मैंने कहा कि यह अधिकार महर्षि मनु ने ही आपको दिया है।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी श्रोताओं को बताया कि भारतीय संविधान की एक प्रति उनके पास रखी है और तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने यह बात कही थी कि भारत पंथनिरपेक्ष देश है न कि धर्मनिरपेक्ष। मैंने माननीय राष्ट्रपति को एक पत्र भी लिखा था उसकी प्रति और उसकी प्राप्ति की रसीद मेरे पास आज भी सुरक्षित है ,जिसमें मैंने उनसे आग्रह किया था कि आप भारतीय संविधान के संरक्षक हैं और भारत एक पंथ निरपेक्ष देश है अत: आप एक आदेश जारी करें कि कोई भी राजनेता, राजनीतिक दल का अधिकारी या अन्य कोई भी व्यक्ति अपने स्वार्थवश इस तथ्य का दुरुपयोग न करे कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने बड़े ही सुंदर तरीके से अपने तथ्यों को न्यायालय में रखते हुए बताया कि महर्षि मनु एक धर्म प्रवक्ता थे। धर्म का अर्थ है जो वस्तु जैसी है उसको वैसा ही कहना अर्थात जो सत्य है उसको सत्य कहना और जो असत्य है उसको असत्य कहना। मनु महाराज भारतीय संस्कृति व जनमानस के आदर्श पुरुष थे।

आदरणीय धर्मपाल जी ने न्यायालय में कहा कि माननीय न्यायाधीश महोदय, जब भारत आजाद नहीं हुआ था और अंग्रेजों का सुप्रीम कोर्ट लंदन में हुआ करता था, जिसको कि प्रिवी कौंसिल कहा जाता था और वह 1783 में पहली बार कोलकाता में स्थापित हुआ, क्योंकि केस बहुत बढ़ गए थे और वहां सुनवाई करने में व्यय और समय बहुत लगता था। उनके प्रथम न्यायाधीश सर विलियम जोन्सन ने अपने उद्बोधन में कहा था कि मैं अपने निर्णयों में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, जनमानस और यहां के जनजीवन के अनुरूप ही अपने फैसले दूंगा। उन्होंने जब इस बात की जानकारी एकत्र की तो उनको मालूम पड़ा कि महर्षि मनु की विचारधारा से पूरा भारतीय जनजीवन प्रभावित है और यह भारत की सर्वविदित मान्यता है। उन्होंने महर्षि मनु और उनकी विचारधारा या व्यवस्थाओं को जानने के लिए, उसको पढ़ने के लिए, उसके तथ्यों को समझने के लिए पूरा प्रयास किया और बहुत ही कष्टों को सहकर अथक मेहनत और दृढ़निश्चय के उपरांत उन्होंन संस्कृत भाषा को सीखा, ताकि मनुस्मृति के मूल रूप को वे जान सकें। उन्होंने माना भी और जाना भी कि भारतीय संस्कृति व संविधान पूर्णत: मनुस्मृति पर आधारित है। कालांतर में माननीय सर विलियम जशन्स ने अपने बहुत सारे निर्णयों में मनुस्मृति का उल्लेख किया और उसी पर आधारित अपने निर्णय दिए।

आर्य जी ने अपनी इस ऐतिहासिक परिचर्चा में बतलाया कि न्यायालय में मैंने बहुत सारे विदेशी पुस्तकों और लेखकों के उदाहरण प्रस्तुत किए। विभिन्न देशों की न्याय व दंड व्यवस्था के उदाहरण भी दिए जो कि मनुस्मृति पर ही आधारित हैं।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने श्रोताओं को बताया कि मैंने न्यायालय को जानकारी दी कि पूर्व राष्ट्रपति माननीय सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने महर्षि मनु को भारत का प्रथम न्याय व्यवस्थापक कहकर संबोधित किया था। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने भी श्री अंबेडकर को आधुनिक मनु कह कर संबोधित और सम्मान दिया था। तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन आदरणीय भीमराव अंबेडकर जी को सम्मानित करने के लिए एक बार जयपुर गए थे और वहां उन्होंने कहा था कि आदरणीय अंबेडकर जी के और मेरे आदर्श पुरुष महर्षि मनु ही हैं।

श्री धर्मपाल जी ने विभिन्न न्यायाधीशों तथा न्यायालय के फैसलों के उदाहरण दिए, ऐतिहासिक प्रमाणों के उदाहरण दिए तथा दंड व्यवस्था के विधि विधान पर बहुत सारे विद्वानों द्वारा मनु की व्यवस्था को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करते हुए उदाहरण न्यायालय में प्रस्तुत किए और उनका सटीक उल्लेख किया।

महर्षि मनु जन्म से नहीं कर्म के अनुरूप ही उसका वर्ण मानते थे। जाति प्रथा को यदि महर्षि मनु से पूर्व देखा जाए तो वेदो में भी यही आदेश और ज्ञान दिया गया है कि जन्म से किसी का भी वर्ण निर्धारित नहीं हो सकता, उसके कर्मो से ही उसका वर्ण तय होगा। जीव जो करता है, जिसके वह योग्य है, जिस का वह पात्र है वही वर्ण उसको दिया जाता है या वह उसी वर्ण का कहलाया जाएगा।

महर्षि मनु के तर्क में पूरा शरीर एक राष्ट्र है अर्थात ब्राह्मण हमारा मस्तिष्क है, क्षत्रिय हमारा बाहुबल है, वैश्य हमारा धड है और शूद्र हमारे पैर हैं। भारतीय संस्कृति में किसी को सम्मान देते हैं तो उसके चरणों को छुआ जाता है अर्थात शूद्र को सबसे पहले सम्मान दिया जाता है और देने वाला किसी भी वर्ण का अर्थात ब्राह्मण भी हो तो वह अपना सर झुका के सम्मान देता है। ऐसा योगी तपस्वी महर्षि कैसे किसी का अपमान कर सकता है, दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुंचा सकता है या दुख दे सकता है, जो दूसरे के सम्मान देने के लिए उसके चरणों को स्पर्श करने की व्यवस्था का पक्षधर हो या व्यवस्थाओं को स्थापित कर रहा हो।

अछूत या अस्पृश्यता हमारी वैदिक परंपराओं में कहीं भी नहीं है। दरिद्र की संतान या राजा की संतान का पालन पोषण, शिक्षा व्यवस्था या कोई और व्यवस्था हो तो समान रूप से की जाती थी। प्राचीन काल मे कोई भेदभाव नहीं था, हर व्यक्ति को एक समान सम्मान दिया जाता था। महर्षि मनु द्वारा दंड विधान भी विभाजित किया हुआ था कि अगर शूद्र चोरी करे तो उसको 8 पर्ण जुर्माना हो, वैश्य करें तो 16 पर्ण, क्षत्रिय करे तो 32 पर्ण जुर्माना हो और अगर ब्राह्मण करें तो 64 पर्ण जुर्माना हो और यदि किसी कारणवश राजा को चोरी करते हुए पकड़ा जाए तो हजार पर्ण के जुर्माने की व्यवस्था थी। महर्षि मनु ने-

**यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम।**
**लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पण: किं करिष्यति।।**

अर्थात जिसके पास अपनी बुद्धि नहीं है, अपना विवेक नहीं है, उसकी कोई शास्त्र भी भला या सहायता नहीं कर सकता है। ये बिल्कुल उसी प्रकार है जैसे दर्पण अंधे व्यक्ति के लिये अनुपयोगी है। उसी प्रकार विवेकहीन, अज्ञानी, बुद्धिहीन व्यक्तियों के लिए हर तरह का शास्त्र भी अनुपयोगी है।

**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।**
**यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।।**

जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों

*- शेष पृष्ठ 8 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

सुनना ही नहीं चाहिए उसे गुनना भी चाहिए, उस पर चिंतन मनन भी करना चाहिए, इससे भी आगे उस पर अमल भी

करना चाहिए। इन दिनों में विशेष रूप से वेदों के परायण यज्ञों के साथ सत्संगों के आयोजन पहले भी होते थे और आर्य समाजों द्वारा आज भी होते हैं। यह अलग बात है कि इस बार कोरोना वायरस के कारण आर्य समाजों मे आयोजन करने सेभव नहीं हो पा रहे हैं। लेकिन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इस कोरोना काल में लगातार आपको घर बैठे सुयोग्य विद्वानों के वेद प्रवचन, सत्संग, मधुर भजन आदि आर्य संदेश टीवी चैनल, जूम एप्प आदि के माध्यम से सुनाए जा रहे हैं। यह अलग बात है कि हम कितना सुनते हैं और क्या सुनते हैं। आजकल सबसे बड़ी समस्या यही है कि व्यक्ति सुनना नहीं चाहता केवल सुनाना चाहता है, अगर कोई काम की बात हो तब भी आदमी यही कहता है कि बस करिए मुझे पता है, छोटे बच्चे तो यहां तक कह देते हैं कि भाषण नहीं देना, जैसे माता पिता कुछ कहने की कोशिश करते हैं तो बच्चे कहने लगते हैं कि हो गए शुरू भाषण देने के लिए, बस हमें नहीं सुनना.. क्योंकि अधिकांशतया समाज में सबकी बुद्धि पर अहंकार सवार हो गया है, सब केवल सुनाना चाहते हैं सुनना कोई नहीं चाहता। श्रावण मास में हम यह अवश्य सोचें कि जो वेदादि शास्त्रों को सुनेगा, सोचेगा, विचार करेगा, चिंतन मनन करेगा, और उन पर अमल करेगा वही कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ेगा।

**श्रावणी पर्व पर यज्ञों का आयोजन**

श्रावणी पर्व पर जहां एक तरफ वेदादि शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का महत्व माना गया है वहीं दूसरी ओर वेदों के वृहद यज्ञों के विशेष आयोजन करने का विधान है। असल में प्राचीन काल में यज्ञ और सत्संगों के आयोजनों पर विशेष मेलों की तरह भीड़ जुटती थी, उस समय राजा और प्रजा, गुरु और शिष्य, पति-पत्नी, सभी लोग अपनी सामर्थ्यानुसार उत्तम श्रेष्ठ कार्यों के प्रचार में अपना योगदान भी देते थे और हर्षोल्लास से सेवा भी करते थे। इसीलिए उस समय सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र रहता था। लगभग सभी मनुष्य स्वस्थ और प्रसन्न रहते थे, धन-धान्य की अभिवृद्धि रहती थी। श्रावण मास में किए जाने वाले यज्ञों में विशेष रूप से ऋतु के अनुकूल सामग्री प्रयोग की जाती थी, वर्षा ऋतु में जो अनेकानेक जीवाणु-विषाणु पनपते हैं उनसे मानव समाज की रक्षा हेतु विशेष औषधीय सामग्री प्रयोग करने का ही विधान है । यज्ञ का जितना आध्यात्मिक लाभ होता है उससे कहीं अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी लाभ होता है। यज्ञ हमारे आस-पास के सारे विषैले वातावरण को शुद्ध करके हमें उत्तम जलवायु प्रदान करते हैं, यज्ञ अपने आप में एक विज्ञान है। यज्ञ में डाला हुआ हर पदार्थ सूक्ष्म होकर वायु में मिल जाता है और वह चाहे कोई मित्र हो या अमित्र, अपना हो या पराया हो, यज्ञ करता हो या न करता हो, आपके प्रति अच्छी भावना रखता हो या द्वेष रखता हो, सबको बराबर मात्रा में प्राप्त होता है। इसलिए यज्ञ को परोपकार का सबसे बड़ा महान कार्य माना गया है। श्रावणी पर आर्य समाज द्वारा लगातार विशेष यज्ञों का आयोजन करना एक महान परंपरा रही है। इस बार कोरोनावायरस की वजह से हम सामूहिक रूप से बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन तो नहीं कर सकते लेकिन वर्षा ऋतु के अनुकूल सामग्री तैयार करके हमें अपने

***आजकल सबसे बड़ी समस्या यही है कि व्यक्ति सुनना नहीं चाहता केवल सुनाना चाहता है, अगर कोई काम की बात हो तब भी आदमी यही कहता है कि बस करिए मुझे पता है, छोटे बच्चे तो यहां तक कह देते हैं कि भाषण नहीं देना, जैसे माता पिता कुछ कहने की कोशिश करते हैं तो बच्चे कहने लगते हैं कि हो गए शुरू भाषण देने के लिए, बस हमें नहीं सुनना.. क्योंकि अधिकांशतया समाज में सबकी बुद्धि पर अहंकार सवार हो गया है, सब केवल सुनाना चाहते हैं सुनना कोई नहीं चाहता। श्रावण मास में हम यह अवश्य सोचें कि जो वेदादि शास्त्रों को सुनेगा, सोचेगा, विचार करेगा, चिंतन मनन करेगा, और उन पर अमल करेगा वही कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ेगा।***

घर परिवारों में नियम और व्यवस्था को अपनाकर यज्ञ अवश्य करना चाहिए और वेदों की विशेष ऋचाओं का प्रयोग करके विश्व मंगल की कामना करनी चाहिए।

**श्रावणी और यज्ञोपवीत**

श्रावणी पर यज्ञोपवीत धारण करना हमारी प्राचीन परंपरा है। इस अवसर पर पुराने यज्ञोपवीत बदलकर नए यज्ञोपवीत धारण करने का भी विधान है। यज्ञोपवीत हमारे लिए कर्तव्य परायणता की प्रेरणा का प्रतीक चिन्ह है। यज्ञोपवीत के संबंध में यह स्पष्ट रूप से कहा जाता है कि यह हमारा व्रत सूत्र है, यह विद्या का चिन्ह है, यह हमें मानवीय कर्तव्यों का स्मरण कराता है, जैसे पुलिस और सेना के प्रत्येक छोटे-बड़े व्यक्ति के पद और प्रतिष्ठा का सूचक उसकी पोशाक में लगा हुआ चिन्ह होता है, जैसे किसी भी विशेष सरकारी कार्यक्रम में व्यक्ति की योग्यता और पद प्रतिष्ठाा के अनुसार उसके बैठने की व्यवस्था होती है और उस परंपरा का उल्लंघन भी आपत्तिजनक माना जाता है। उसी प्रकार यज्ञोपवीत के तीन तार प्रतीक होते हुए भी मानव जीवन में बहुत महत्व रखते हैं। जैसे बिना वर्दी के किसी सेना व पुलिस अधिकारी का कोई वैधानिक अधिकार में महत्व नहीं होता, उसी प्रकार मानव जीवन में यज्ञोपवीत धारण करे बिना हमारा कोई सही उददेश्य और आधार नहीं होता। हमारे आचरण और व्यवहार को सही दिशा मिले, हम अपने कर्तव्य पथ पर अडिग होकर चलें, हमारी प्रतिष्ठा बढ़े और हम कर्तव्य पालन के लिए प्रेरणा प्राप्त करते रहें इसके लिए हमें व्रत सूत्र मतलब यज्ञोपवीत पहनना ही चाहिए। यह हमें आलस्य और प्रमाद से भी बचने की प्रेरणा देता है। इस सूत्र को पिता-पुत्र, गुरु -शिष्य, पति -पत्नी सबको धारण करना चाहिए। कुछ लोग पत्नी के स्थान पर पति 6 तार का यज्ञोपवीत धारण कर लेते हैं, जबकि ऐसा कोई शास्त्रीय विधान नहीं है । यह केवल अंधविश्वास है, कभी भी पत्नी का भोजन पति नहीं करता, पत्नी की बजाए पति व्यायाम करके स्वस्थ नहीं होता, सबका अपना-अपना आत्मा है, अपना अपना शरीर है, अपने अपने कर्तव्य हैं और अपनी-अपनी शक्ति है, सामर्थ्य है, सबके कर्तव्य और कर्म भी अपने-अपने अलग हैं, फिर कोई पुरुष कैसे अपनी पत्नी के नाम का यज्ञोपवीत पहन सकता है? इसलिए सबको अपना यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए और श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर यज्ञोपवीत बदलना भी चाहिए।

**यज्ञोपवीत की रक्षा हेतु आर्य समाजियों का बलिदान**

आर्य समाज के इतिहास में क्रांतिवीर श्री रामरखामल को हमें नमन करना चाहिए, जिन्होंने अपने यज्ञोपवीत की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था। काले पानी के राज बंदियों को, क्रांतिकारियों को जेल के नियम के अनुसार यज्ञोपवीत उतारना पड़ता था। ऐसा ईसाई शासकों ने अनिवार्य कर रखा था। वीर रामरखामल नाम के एक आर्य क्रांतिकारी को भी आज्ञा दी गई, उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया, अन्याई जेल अधिकारियों ने, पाषाण हृदय विधर्मी अपराधियों ने उसको उसका व्रत सूत्र उतारने को कहा और जब उसने नहीं उतारा तो उन्होंने क्षण भर में उसे खंडित कर दिया। वीर रामरखामल ने भूख हड़ताल करके अपने प्राण दे दिए, लेकिन बिना यज्ञोपवीत के अन्न ग्रहण न करने का व्रत लेकर उसने इस व्रतसूत्र के लिए, धर्म के लिए अपना बलिदान कर दिया। यह बात उस समय की है जब स्वातंत्रय वीर सावरकर भी अंडमान की जेल में बंदी थे।

**यज्ञोपवीत और हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह**

सन 1939 के हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भी यज्ञोपवीत की महिमा और गौरव की अपनी ही गाथा है। आर्य सत्याग्रह से पूर्व निजाम उस्मान ने डींग मारते हुए एक गजल में लिखा था-

बंद नाकूस हुआ
सुनके नकाय तकबीर।
जलजला आ ही गया
सिसले जिन्नार पै भी।।

अर्थात मस्जिदों में अल्लाह हू अकबर की आवाज सुनकर हिंदुओं के दिल दहल गए। मंदिर के शंख बंद हो गए। इनके भयभीत होने से शरीर कांपने लगे और शरीर पर लिपटे यज्ञोपवीत पर भी भूकंप -सा आ गया।

उस समय पंडित गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने यज्ञोपवीत के लिए अपनी कविता में लिखा था-

तीन धागे थे फकत
सूत के कच्चे लेकिन।
बाजी जुन्नार ने ली
हैदरी तलवार पै भी।।

हजारों आर्य वीरों ने धर्म की रक्षा के लिए जेल जाकर, कई एक लोगों ने बलिदान देकर यज्ञोपवीत के तीन धागों की प्रेरणा से ऐसा शक्ति और साहस से चमत्कार कर दिखाया कि संसार देखता ही रह गया। इन्हीं सूत के तीन धागों ने हैदरी तलवार पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त करके उस्मान को धूल चटा दी। वीर वेद प्रकाश, धर्म प्रकाश, भाई श्याम लाल आदि ने प्राण पण से अपने यज्ञोपवीत की रक्षा की। उन्होंने अपने प्राण देकर रक्षा बंधन का पर्व मनाया, श्रावणी पर्व उनके गौरवपूर्ण बलिदानों से महिमामंडित हो गया। श्रावणी पर्व पर अब प्रतिवर्ष दक्षिण के वीरों का पुण्य स्मरण किया जाता है-

उपनयन धारकर अपने नयन खोलिए, भविष्य को उज्जवल बनाइए, अपने मन का मैल मिटाइए।

***- आचार्य अनिल शास्त्री***

# लड़कियां माता-पिता को अवश्वस्त कैसे करें?

.... वेद कहता है - **अघः पश्यस्व मोपरि पादौ संतरौ हर। मा ते कशप्लकौ हशन् स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ।।**

अर्थात् - हे नारी! तू नीचे देखकर चल, कहीं तेरे कदम गलत मार्ग के ओर न उठ जायें। अपने शरीर को ढककर रख क्योंकि तू ब्रह्म अर्थात् जगजननी और शुभ कर्मों की अधिष्ठात्री है। तेरे हाथ में कुल की लाज है। अब प्रश्न उठता है कि जब परिवार के लोग अपनी पुत्री की चेष्टाओं और अन्य गतिविधियों को सन्देह, शक अथवा किसी अनहोनी घटना की दृष्टि से देखते हैं तो उस समय उसे क्या करना चाहिये, जिससे कि परिवार के लोग आश्वस्त हो जायें।

*- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती*

लड़कियाँ देहली का दीपक हैं जो घर और बाहर दोनों को प्रकाशित करता है। परमात्मा ने कुछ गुण स्त्री-पुरुष को समान और कुछ विशिष्ट गुण प्रदान किये हैं। दोनों की अपनी विशेषतायें हैं। ऐसी स्थिति में लड़कियों का पुरुषों जैसी हर कार्य में स्पर्धा करना उचित नहीं है। परन्तु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि वे पुरुषोचित कार्य नहीं कर सकती। आज खेल प्रतियोगिता, सेना प्रशासनिक व्यवस्था सभी में उनका महत्वपूर्ण योगदान है परन्तु पुरुषों जैसे वस्त्र धारण करना, वैसा ही व्यवहार, धूम्रपान, मद्यपान, अल्पवस्त्र पहनना और बिना विवाह के लिव-इन-रिलेशन में रहना आदि कार्य कदापि उचित नहीं माने जा सकते यह पश्चिम की अप संस्कृति की नकल है।

स्त्रियाँ राष्ट्र निर्माण की वे विभूतियां हैं जिन्होंने मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर कृष्ण, अर्जुन, भीम से योद्धा, शंकराचार्य, स्वामी दयानन्द, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी जैसे महामानवों के जन्म दिया है। राष्ट्र की जो सबसे महत्त्वपूर्ण इकाईयाँ या संस्थान हैं उनकी उतनी ही अधिक सुरक्षा की जाती है। वेद कहता है -

**अघः पश्यस्व मोपरि पादौ संतरौ हर। मा ते कशप्लकौ हशन् स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ।।**

हे नारी! तू नीचे देख कर चल, कहीं तेरे कदम गलत मार्ग के ओर न उठ जायें। अपने शरीर को ढककर रख क्योंकि तू ब्रह्म अर्थात् जगजननी और शुभ कर्मों की अधिष्ठात्री है। तेरे हाथ में कुल की लाज है। अब प्रश्न उठता है कि जब परिवार के लोग अपनी पुत्री की चेष्टाओं और अन्य गतिविधियों को सन्देह, शक अथवा किसी अनहोनी घटना की दृष्टि से देखते तो उस समय उसे क्या करना चाहिये, जिससे कि परिवार के लोग आश्वस्त हो जायें।

शास्त्रकार कहते हैं स्त्री को विवाह से पहले माता-पिता, विवाह के पश्चात् पति और वृद्धावस्था में पुत्र-पुत्रवधू के अनुशासन में रहना चाहिये। उसकी स्वतन्त्रता दूषण कारक है। स्मरण रहे विद्या, कला-कौशल आदि में सबको स्वतन्त्रता है परन्तु स्वतन्त्रता का अभिप्राय स्वच्छन्दता कदापि नहीं है।

लोक में कहावत है- **'बाप के घर बेटी गूदड़ लपेटी'** अपने परिवार में लड़कियों को सादी वेशभूषा और अपने शारीरिक तथा बौद्धिक विकास की ओर ध्यान देना चाहिये। विवाह के पश्चात् श्रृंगार करना समाज की परम्परा है। विवाह से पहले फैशन के लिये छोटे वस्त्र पहिनना, अर्ध नग्न रहना आदि प्रशंसनीय नहीं माना जा सकता। इससे वासना की वृद्धि हो अनैतिक कार्य होते हैं जिसका दुष्परिणाम सारे परिवार को भोगना पड़ता है।

आजकल लड़कियाँ बाजार के बिकाऊ माल की भाँति हो गई हैं जिन्हें देख कुछ लोग भूखे भेड़ियों की भाँति स्त्री को केवल वासना पूर्ति का साधन मात्र समझते हैं। उनकी कुदृष्टि से बचने के लिये ही माता-पिता हर समय अपनी पुत्रियों का ध्यान रखते हैं, तो लड़कियों की इससे परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

वर्तमान की सह शिक्षा पद्धति और इलैक्ट्रोनिक संचार साधनों के कारण गोपनीय कुछ रहा ही नहीं है जिसे देखकर उन कार्यों को क्रियात्मक रूप में करने की इच्छा ही लड़कियों को अपने जाल में फंसाने या बलात्कार करने को प्रेरित करती हैं। एक बार शीलभंग हो जाने पर आजीवन इस कलंक के दाग को मिटाया नहीं जा सकता। इसीलिये माता-पिता अपनी लड़की के लिये चिन्तित रहते हैं।

विद्यार्थी जीवन अपनी क्षमताओं का विकास करने के लिये है। आजकल पढ़ी-लिखी और नौकरी से जुड़ी लड़कियों के विवाह आसानी से हो जाते हैं। जब लड़कियाँ इधर ध्यान ने देकर दूसरे कार्यों में संलग्न हो जाती हैं तो माता-पिता का चिन्तित होना स्वाभाविक ही है।

हो सकता है कि इन सभी कारणों में पूरी सच्चाई नहीं हो। परन्तु माता-पिता एवं कुल-खानदान की भी कुछ मर्यादाएं

*- शेष पृष्ठ 7 पर*

# Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

**Continue From Last issue**

*.....When Munshi Ram arrived at the place of the lecture, he felt very surprised for in the audience he saw some Englishmen. But he was all the more surprised when he listened to the lecture. He wondered how a man who knew only Sanskrit could be so interesting and convincing. .....*

*.....Swami Dayanand heard him patientlyand kept quiet. But next day in the course of his lecture the Swami said, "1 will always speak the truth, come what may. 1 do not care for the Collector nor am 1 afraid of the Commissioner. Even the Governor cannot hold me back from telling the truth. I stand for truth and I will die for it." ....*

One nlght he was present at the dinner of a friend of his, where most of the guests were drinking. It is said that Munshi Ram also drank a little. But one ofthe guests drank so much that he could not walk steadily. Munshi Ram saw him home. But when this man reached his house he started to drink again. The result was that he felt very sick. He also said many improper things.

To Munshi Ram this man appeared to be a confirmed drunkard. He had lost all control over himself. He was, in the eyes of some, an object oflaughter, but to Munshi Ram he appeared to be an object of pity. "So this comes of drinking. It makes beasts of us. It makes us forget ourselves. It leads us to do things which no man in his senses would ever do," though Munshi Ram.

It then seemed as if Swami Dayanand stood in front of him. He seemed to ask him, "What have you made of your life? Why have you fallen so low? Won't you give up this bad company and make an attempt to be a goodman?"

Munshi Ram turned these things over in his mind for sometime. At last he resolved never to touch wine again. After this he went to sleep. Next morning when he woke up, he was pleased with his decision. That very day he left for Lahore. Needless to say, he remained faithful to his resolution all his life.

At Lahore he devoted himself to his studies with all his heart. In his spare time he attended meetings of the BrahmoSamaj and the Arya Samaj. One Brahmo preacher impressed him very much by his earnestness and sincerity. He even thought of joining the Brahmo Samaj. But he could not reconcile himself to one of the doctrines of the Brahmo Samaj. He had, therefore, to give up this idea. It was at this time that he got a copy ofthe Satyarth Prakash (The Light of Truth) by Swami Dayanand. He became interested in it, and this completed his conversion to the Arya Samaj. Then he joined it. He was welcomed by all theArya Samajists. They feltthey had drawn a really able young man toward the Arya Samaj. It is said that one of the elders remarked at that time, "This young man will infuse a new spirit into the Arya Samaj." These words ultimately proved true.

Munshi Ram proved a zealous worker in the cause of the Arya Samaj. Even though he was a student, he tried to explain its objects by lecturing. His first public speech was made at Jalandhar It was on the subject of early marriage and the practice of Brahmcharya. Such was the effect of his lecture on the audience that one of them said, "Though my wife wants to betroth our son, although he is only one year old, I will not marry him till he is twenty-five."

About this time Munshi Ram's father fell a prey to a cruel disease called paralysis. Munshi Ram went to his native place to look after him. The patient soon recovered but Munshi Ram stayed on there.

One day there arose a difference between father and son. It was one of the sacred days of the Hindus. On this day pitchers full of water and fruit are given away to the Brahmins. Munshi Ram's father got a great many pitchers and a lot of fruit for this purpose. He wanted every member of his family to give something away. Everyone but Munsh i Ram did so. Thereupon the father asked him in an argry tone why he was not doing so. Munshi Ram said, "I have no faith in this kind of charity. I have a great regard for the real Brahmins, but none for the sort of Brahmins we find here today. I do not want to disobey you, but also I do not want to do that which I think unwise." There upon the father kept quiet.

After sometime Munshi Ram thought ofleaving for Lahore. That day his father asked him again to make some offerings to the god in the temple. But he refused. At this his father flew into a rage and said, "If you are inclined this way I do notthink my last rites will be performed properly." Munshi Ram then said, "I do not want to disobey you, but surely you would not like

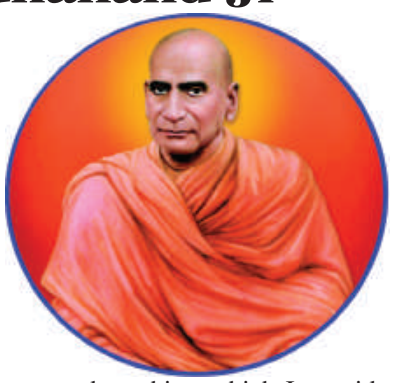

me to do a thing which I consider wrong. I do not believe in these idols and, therefore, cannot make any offerings to them." On hearing this his father heaved a sigh and said, "God's will be done."

It is not, however, out of place to relate that after sometime his father also got interested in theArya Samaj. Then he came to admire his sonfor.his honestyandfrankness, On reaching Lahore Munshi Ram again worked hard at his books. But much of his time he gave to theArya Samaj. He sat for the examination, though he was not declared successful.

Then he started his practice at Jalandhar. His clerk had the words " Legal Practitioner" written on his signboard. As Munshi Ram thoughtit was not true he had them removed at once. One day his friends asked him to dinner. They all persuaded him to take drink. But no sooner was the cup put to his lips than he was sick. At this all his friends felt ashamed of themselves.

***To be continued.....***

***With thanks By:***
***"Makers of Arya Samaj"***

पृष्ठ 2 का शेष

## तिब्बत अब विश्व का मुद्दा बनना ....

इस प्रकार जिसे कहते हैं 'आ बैल मुझे मार' वाली स्थिति भारत ने स्वयं पैदा की। भारत ने बिना कुछ पाए अपने हाथ कटवा लिए। भारत को किसी भी हाल में यह संधि नहीं करनी चाहिए थी। इस संधि पर हस्ताक्षर भारत के लिए मृत्यु के वारंट के समान था, इससे तिब्बत तो हाथ से गया ही साथ ही हमारा भी अहित हुआ।

इतना ही नहीं, नेहरू ने जिस प्रकार दलाई लामा को वापस ल्हासा जाने को कहा था, उस पर संसद में तीखी बहस छिड़ गई थी और जिसमें नेहरू आलोचना के शिकार हुए थे। पंचशील के दस्तावेज को लेकर तो आचार्य कृपलानी ने यहां तक कह दिया कि यह पाप से उत्पन्न हुआ है और एक प्राचीन राष्ट्र के विनाश पर हमारी सहमति की मुहर लगाने के लिए तैयार किया गया है।

इधर संसद में बहस चल रही थी दूसरी तरफ उधर तिब्बत में वहां के लोगों को सूली पर चढ़ाना, अंग-अंग काटकर मारना, पेट फाड़कर अंतड़ियां बाहर निकालना, छेद-छेदकर मारना, इत्यादि अत्याचार चरम पर थे। अंत में जब दलाई लामा के पास कोई विकल्प नहीं बचा, तो उन्होंने मार्च 1959 में भारत आने का निर्णय लिया। अब चूंकि नेहरू को अपने किए पर ग्लानि हो रही थी, इसलिए उन्होंने दलाई लामा को शरण दे दी।

यह प्रकरण तो अब इतिहास का हिस्सा बन चुका है, परंतु बताने का उद्देश्य यही था कि इसी में वह बीजतत्व छिपा है, जिससे हम फिर से चीन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए अब हमें अपनी पुरानी नीति त्यागकर खुल्लम-खुल्ला यह कहना चाहिए कि तिब्बत को मुक्त करो, क्योंकि उस पर चीन का अवैध कब्जा है।

हमें इस पर लगातार लिखना, इसे ही टीवी पर बहस तथा समाचार पत्रों का मुख्य विषय बनाना चाहिए। इसमें ताइवान के पत्रकारों को बुलाइए, तिब्बती लोगों को बुलाइए, उनकी डॉक्यूमेंटरी बना बनाकर विश्वभर की मीडिया को देनी चाहिए। इसी प्रकार हांगकांग में हो रहे आत्याचार को लेकर मानवाधिकार की बात करनी चाहिए, और इसी तरह ताइवान से भी हमें सहानुभूति जतानी चाहिए। चीन की सरकार तानाशाह है, हमें इसका भी जोर-शोर से प्रचार करना चाहिए। हमें इस बात का भी प्रचार करना चाहिए कि चीन के लोग दुनिया के सर्वाधिक त्रस्त लोगों में हैं, उनके पास किसी भी तरह की स्वतंत्रता नहीं है, चीन खुफिया तंत्र के आधार पर चलता है और तानाशाही शासन अपनी आलोचना करने वालों को ठिकाने लगाता है। हमारे पास लोकतंत्र नामक एक ऐसा शस्त्र है, जिसकी चीन के पास कोई काट नहीं है। वहां के लोगों की खातिर हमें चीन में लोकतंत्र स्थापित करने की मांग भी करनी चाहिए, इससे चीन का मनोबल गिरेगा, हमें याद रखना चाहिए कि युद्ध केवल सीमा पर ही नहीं होता। यह देश के अंदर भी होता है। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 6 का शेष

होती हैं। उन्हें बचाये रखने के उनका चिन्तातुर होना उचित ही है। ऐसी स्थिति में लड़कियों का यह दायित्व बनता है कि वे अपने माता-पिता को आश्वस्त करें। इसके लिये निम्न सुझाव दिये जाते हैं-

1. विद्यालय समय पर जायें और समय पर घर आ जायें। यदि कभी किसी कार्यवश घर आने में विलम्ब हो रहा है इसकी सूचना घर पर देना आवश्यक है। इससे माता-पिता निश्चिन्त रहेंगे।

2. अवकाश के दिन गृहकार्यों में सहयोग करना चाहिये। इससे उनका विश्वास बना रहेगा कि मेरी लड़की किसी दूसरे चक्कर में नहीं है।

3. जहां तक हो सके रात्रि का भोजन सारे परिवार को मिलकर करना चाहिये। उस समय कोई बात है तो उसे सामने रख कर उसका समाधान ढूंढा जा सकता है।

4. लड़कियों को अनिवार्य रूप में आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लेना चाहिये जिससे विपत्ति में अपनी रक्षा की जा सके।

5. अपने अच्छे भविष्य निर्माण में ही ध्यान देना चाहिये। मोबाईल पर गप-शप मारना, मित्र बनाना आदि में व्यर्थ समय गंवाना अच्छा नहीं है।

6. अधिकांश में लड़कियां पिता को अधिक प्रिय होती हैं। इसलिये उन्हें पिता के साथ नि:संकोच होकर अपनी मनोभावना को प्रकट करना चाहिये।

7. जिस लड़की ने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया है वह अनावश्यक बातों से दूर रहती है क्योंकि उसके पास इतना समय नहीं होता और उसकी ओर से माता पिता भी निश्चिन्त हो जातें।

8. मोबाईल से ट्वीट करना, अधिक समय तक मोबाईल सुनते रहना, इंटरनेट चलाना, अकेला रहना इत्यादि कार्य सन्देह की पुष्टि करते हैं।

प्रेरक प्रसंग

## मैं तो भिक्षा का ही भोजन करूंगा

हमारे ऋषियों ने जीवन-निर्माण के लिए कई ऐसे आदेश-निर्देश दिये हैं, जिनका पालन करना तो दूर रहा, आज के भौतिकवादी युग में उनकी गौरवगरिमा को समझना भी हमारे लिए कठिन हो गया है। ब्रह्मचारी भिक्षा माँगकर निर्वाह करे और विद्या का अभ्यास करे, यह भी एक आर्ष आदेश है। अब बाह्य आडम्बरों से दबे समाज के लिए यह एक हास्यास्पद आदेश है फिर भी इस युग में आर्यसमाज के लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी, स्वामी वेदानन्दजी से लेकर हिसारवाले स्वामी अग्निदेवभीष्म ने भिक्षा माँगकर अनेक विद्यार्थियों को विद्वान् बनाया है। दीनानगर दयानन्द मठ में अब भी एक समय भिक्षा का भोजन आता है।

जब पं. ब्रह्मदत्तजी 'जिज्ञासु' पुल काली नदीवाले स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज के आश्रम में पढ़ाते थे तो आप ग्रामों से भिक्षा माँगकर लाते थे। दोनों समय भिक्षा का अन्न ही ग्रहण किया करते थे। वीतराग स्वामी सर्वदानन्दजी ने कई बार आग्रह किया कि आप आश्रम का भोजन स्वीकार करें, परन्तु आपका एक ही उत्तर होता था कि मैं तो ऋषि की आज्ञानुसार भिक्षा का ही भोजन करूँगा।

कितना बड़ा तप है। अहंकार को जीतनेवाला कोई विरला महापुरुष ही ऐसा कर सकता है। दस वर्ष तक श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य पद को सुशोभित करते रहे परन्तु एक बार भी विद्यालय का भोजन ग्रहण नहीं किया। भिक्षा का भोजन करनेवाले इस आचार्य ने पण्डित रामचन्द्र (स्वामी श्री सर्वानन्दजी) व पण्डित शान्तिप्रकाशजी शास्त्रार्थमहारथी जैसे नर रत्न समाज को दिये।

पण्डित ब्रह्मदत्तजी 'जिज्ञासु' ने पूज्य युधिष्ठिरजी मीमांसक-जैसी विभूतियाँ मानवसमाज को दी हैं। हम इन आचार्यों के ऋण से मुक्त नहीं हो सकते। पण्डित हरिशंकर शर्माजी ने यथार्थ ही लिखा है-

**निज उद्देश्य साधना में अति संकट झेले कष्ट सहे।**
**पर कर्तव्य-मार्ग पर दृढ़ता से वे अविचल अड़े रहे।।**

*- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*

*साभार :*

*तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*** **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

शोक समाचार

## आचार्य कमलेश अग्निहोत्री जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात एवं आर्यसमाज कुबेर नगर अहमदाबाद से जुड़े वैदिक विद्वान आचार्य कमलेश कुमार अग्निहोत्री जी का 25 जुलाई, 2020 को निधन हो गया। वे लगभग 89 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

## श्री काली चरण खन्ना जी का निधन

आर्यसमाज यमुना नगर के सह कोषाध्यक्ष एवं आर्यसमाज को निरन्तर सहयोग करने वाले श्री कालीचरण खन्ना जी का दिनांक 25 जुलाई, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

## माता नरेश वोहरा का निधन

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन की सदस्या एवं स्त्री आर्यसमाज की पूर्व प्रधाना श्रीमती नरेश वोहरा जी का 22 जुलाई, 20 को प्रात: 11:15 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सीमापुरी शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

## श्री वीर विजय कुमार का निधन

आर्यसमाज नवीन शाहदरा के संरक्षक श्री वीर विजय कुमार जी का 21 जुलाई, 2020 को प्रात: 11 बजे निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 जुलाई, 2020 को उनके आवास पर आयोजित की गई।

## श्रीमती सन्तोष मित्तल का निधन

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के पूर्व कोषाध्यक्ष स्व. श्री लालचन्द जी मित्तल की पुत्रवधु एवं वर्तमान कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल जी मित्तल जी के भ्राता श्री सुरेशजी मित्तल की धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोष जी का 19 जुलाई, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

## श्री शिव कुमार शास्त्री जी का निधन

श्री सर्वदानंद संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़ के हिंदी विभागाध्यक्ष श्री शिवकुमार शास्त्री जी का 20 जुलाई को प्रात: 9 बजे रोडवेज बस से दुर्घटना होने के कारण देहावसान हो गया। शास्त्री जी महाविद्यालय को जाने के लिए अतरौली अबन्तीबाई चौराहे पर वाहन का इंतजार कर रहे थे उसी समय रोड बस ने पीछे से रोंद दिया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया।

## श्री दिलीप जी को पितृशोक

आर्यसमाज घाटकोपर, मुम्बई के प्रधान एवं श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी के दामाद श्री दिलीप जी के पूज्य पिताजी श्री विश्राम शीवगुन वेलानी जी का 90 वर्ष की आयु में 23 जुलाई को प्रात: 3:30 बजे उनके सबसे छोटे सुपुत्र सुधीर जी के निवास पर्थ (प. ऑस्ट्रेलिया) में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे लगभग 15 वर्षों तक आर्य समाज घाटकोपर के कोषाध्यक्ष रहे।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक**

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 20 जुलाई, 2020 से रविवार 26 जुलाई, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23-24 जुलाई, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 जुलाई, 2020


पृष्ठ 4 का शेष

## मनुस्मृति का सत्य-असत्य .....

की पूजा नहीं होती है, उनका सम्मान नही होता है, वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। महर्षि मनु ने स्त्री जाति को बहुत ही अधिक सम्मान दिया है कि हर अच्छे कार्य, संस्कार या व्यवस्था में स्त्री का बहुत बड़ा योगदान होता है चाहे वह घर पर हो या बाहर कहीं पर भी हो। बहुपत्नी प्रथा को कहीं भी स्थापित नहीं किया, वह इस के घोर विरोधी थे। पुत्र-पुत्री को उन्होंने एक समान माना है और वे किसी एक के पक्षधर नहीं थे। पिंडदान की कहीं व्यवस्था नहीं थी बल्कि जीवित माता पिता आचार्य साधु- संन्यासियों, विद्वानों का यथा योग्य सम्मान सेवा सुश्रुसा करने की व्यवस्था के पक्षधर थे।

अल्प ज्ञान, स्वार्थवश, पूर्वाग्रह आदि कारणों से कुछ व्यक्ति विशेष समूह ने महर्षि मनु का विरोध किया है। राजनीतिक लोगों ने मनु को बहुत बदनाम किया है। अपने स्वार्थ वश मनु महाराज को समझा ही नहीं और हमारी भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। शूद्र तथा महिलाओं का अपमान किया है, यह कहकर कि उन महिलाओं के कान में शीशा डाल देना चाहिए जिन्होंने गायत्री मंत्र और वेद पढ़े हैं।

कुछ राजनीतिक लोगों ने मनु महाराज को बहुत बदनाम किया है। अपने स्वार्थ हेतु हमारी भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। मनुस्मृति में कहीं नहीं लिखा हुआ कि शूद्र और महिलाओं को शिक्षा का अधिकार नहीं है, वे सब सम्मान के योग्य हैं जो कार्य वह करती हैं कोई भी अन्य उनकं सदृश कार्य नहीं कर सकता है।

**ढोल गँवार शूद्र पशु नारी,**
**सकल ताड़ना के अधिकारी**

ढोल एक साज, गंवार मूर्ख, शूद्र कर्मचारी, पशु चाहे जंगली हो या पालतू और नारी स्त्री, धर्मपत्नी, इन सबको साधना अथवा सिखाना पड़ता है.. और समय समय पर निर्देशित करना पड़ता है तथा इन सबका विशेष ध्यान रखना पड़ता है। आर्य जी ने न्यायाधीशों को यह भी बताया कि इतने महान तपस्वी, पूरे विश्व में मान्यता प्राप्त एक महर्षि पर आप किसी राजनीतिक दबाव के अंतर्गत या कुछ अज्ञानी व स्वार्थी व्याक्तियों के समूह के कहने पर या दबाव में आप इस मूर्ति को कहीं और स्थापित करवाएंगे या यहां से हटाएंगे तो यह न्यायालय का अपमान है, उस व्यक्ति का अपमान है, उस व्यवस्था का अपमान है जिसमें हम सब रहते हैं। उन्होंने महर्षि मनु को महान ध र्म प्रवक्ता के रूप में , प्रथम न्याय व्यवस्थापक के रूप में, दंड व्यवस्था के संस्थापक तथा राज्य व्यवस्था के संस्थापक के रूप में स्थापित किया।

न्यायाधीशों ने बहुत सोच-विचार कर, हर पहलू को अच्छी तरह समझते हुए और लंबे विचार-विमर्श के उपरांत status quo अर्थात यथावत स्थिति रखने पर अपना निर्णय दिया।

आदरणीय धर्मपाल आर्य जी से कई महानुभाव काफी लंबे समय से यह अनुरोध कर रहे थे कि आप मनु महाराज की मूर्ति को लेकर राजस्थान उच्चतम न्यायालय वाली ऐतिहासिक घटना से हमें अवगत करावें, किस तरह आपने एक अधिवक्ता के रूप में मनस्मृति के सत्य की विजय में अपना अहम योगदान देकर मानव समाज एक नया संदेश दिया था। इस अवसर पर आपने उन सभी की सात्विक भावनाओं का सम्मान करते हुए पूरा विवरण अपनी सरल सहज शैली में प्रस्तुत करके **'सत्यमेव जयते'** महावाक्य का समाज को प्रमाण सहित संदेश देकर कृतार्थ किया। इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की पीठ के समक्ष इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केस पर अपना पक्ष प्रमाण सहित रखा और न्यायालय को गंभीरता पूर्वक इस पर विचार करना पड़ा और माननीय महर्षि मनु की मूर्ति को वहां से नहीं हटाया गया। इसके लिए आपको सभी प्रबुद्ध श्रोताओं की ओर से हार्दिक बधाई और आभार।

इस कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती हर्ष आर्या, श्रीमती विनीता खन्ना, श्रीमती आदर्श सहगल, श्रीमती मीरा अरोड़ा, श्रीमती विचित्र वीर, श्रीमती अनीता आर्या, श्रीमती शालिनी आर्या, श्री सुरेश चंद गुप्ता, श्री पीयूष शर्मा, श्री प्रवीण बत्रा, श्री विश्वास आर्य, श्री नरेंद्र अरोड़ा, श्री विनोद कालरा, श्री देव मित्र आर्य तथा श्री मोक्ष मेहतानी आदि महानुभावों ने बड़े सुंदर और व्यवस्थित ढंग से किया तथा श्री विपिन भल्ला ने तकनीकी तौर पर इसकी व्यवस्था की।

*- सतीश आर्य, महामन्त्री,*
*आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य*

*प्रतिष्ठा में,*

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में जूम वैबिनार द्वारा**
**श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में**
**वैदिक दर्शनों का स्वरूप**
**सान्निध्य : आचार्य सत्यजित् आर्य जी (रोजड़)**
**27 जुलाई से 9 अगस्त प्रात: 07.35 से 08.30 बजे**
**कृपया अपनी शंकाएं शनिवार, 8 अगस्त तक श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी 8010293949 को भेज देवें। समाधान 9 अगस्त को किया जाएगा।**
फेसबुक से लाइव जुड़ें fb.com/thearyasamaj
जूम एप्प लिंक से जुड़ें https://bit.ly/2OWyt2x

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह